2 कुरिन्थियों

1 पौलुस की तरफ़ से जो परमेश्वर की
इच्छा से मसीह यीशु का प्रेरित है और
हमारे भाई तीमुथियुस की तरफ़ से परमेश्वर
के उस चर्च के नाम जो कुरिन्थुस में है और
सारे अखाया के सब पवित्र लोगों के नाम
2 हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह
की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती
रहे।
3 हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और
पिता का धन्यवाद हो जो तरस[a] के पिता
और सब तरह की शान्ति के परमेश्वर हैं।
4 परमेश्वर हमारी सभी परेशानियों में हमें
तसल्ली देते हैं, ताकि हम उन्हें भी तसल्ली दे
सकें जो किसी तरह की परेशानी में से गुज़र
रहे हैं। 5 क्योंकि जैसे हम मसीह के दुखों[b] के
साथ अधिक गुज़रते हैं वैसे ही हम शान्ति[c]
में मसीह के द्वारा ज़्यादा सहभागी होते हैं।
6 यदि हम क्लेश[d] से गुजरते हैं तो यह तुम्हारी
तसल्ली और उद्धार के लिए है। यदि हमें तसल्ली
मिलती है, तो यह तुम्हारी तसल्ली के लिए
है। उसी के प्रभाव से तुम धीरज के साथ
उस सताव को सह लेते हो, जिन्हें हम भी
सहते हैं। 7 तुम्हारे बारे में हमें पूरा भरोसा
है, क्योंकि हम जानते हैं कि तुम जिस तरह
हमारे सताव[e] में हिस्सेदार हो, ठीक उसी
तरह हमारी तसल्ली में भी हो।
8 हे भाईयो, बहनो हम यह नहीं चाहते हैं
कि तुम उस सताव के बारे में अनजान रहो,
जो हम ने एशिया में सहा था। हमारे ऊपर
ऐसा दबाव आ पड़ा था, जिस को सहना
बहुत मुश्किल था। हमें तो ऐसा लगा था
कि हम ज़िन्दा ही नहीं बचेंगे। 9 हमें ऐसा
लगता था कि हम पर मौत की आज्ञा हो
चुकी थी, ताकि हम अपने ऊपर भरोसा न
रखें, लेकिन केवल परमेश्वर पर जो मरे
हुओं को ज़िन्दा करते हैं, 10 उन्हीं ने हमें मौत
की बड़ी मुसीबत से बचाया और बचाते रहते
हैं। हमारा भरोसा उन्हीं पर है कि आने वाले
समयों में भी वही हम को बचाते रहेंगे। 11 तुम
भी मिल कर बिनती के द्वारा हमारी मदद करो
कि जो अनुग्रह[f] हमें तुम्हारे बिनती करने से
मिला उसके कारण बहुत लोग हमारी ओर
से परमेश्वर को धन्यवाद दे सकें।
12 हम अपने विवेक की इस गवाही के
कारण खुश होते हैं कि दुनिया में और
खासकर तुम्हारे बीच हमारा चालचलन
परमेश्वर के लायक पवित्र और सच्चाई के
साथ था। वह दुनियावी ज्ञान[g] से नहीं लेकिन
परमेश्वर की मदद से था। 13 हम तुम्हें और
कुछ नहीं लिखते हैं, सिर्फ़ वही जो तुम पढ़ते
या समझते हो और हमें आशा है, कि आखिर
तक समझते रहोगे। 14 जैसा तुम में से कितनों
ने समझ लिया है, कि जैसे हम तुम्हारी खुशी
का कारण हैं, वैसे ही तुम भी प्रभु यीशु के
दिन हमारे लिए खुशी का कारण ठहरोगे।
15 मैं यह चाहता हूँ कि पहले तुम से भेंट
करूँ ताकि तुम्हें एक और दान मिले। 16 यह
भी कि मैं तुम्हारे पास से होते हुए मकिदुनिया
को जाऊँ और फिर तुम्हारे पास वापस लौट
आऊँ और तुम मुझे यहूदिया की यात्रा के

[a] 1.3 दया [b] 1.5 यीशु मसीह की वजह से परेशानियाँ [c] 1.5 तसल्ली, सुकून [d] 1.6 सताव [e] 1.7 दुख, तकलीफ़, परेशानियों [f] 1.11 वरदान [g] 1.12 इल्म

लिए रवाना कर दो। 17 इसलिए मैंने जो यह
जल्दबाज़ी की है, तो क्या मैं दुविधा में
था? या जो करना चाहता हूँ वह दुनियावी
सोच-विचार के हिसाब से था, कि एक ही
समय में हाँ, हाँ और नहीं, नहीं भी करूँ?
18 जिस तरह परमेश्वर भरोसेमंद हैं, उसी
तरह तुम्हारे लिए हमारी बातों में हाँ और
नहीं एक साथ नहीं पाए जाते हैं। 19 क्योंकि
परमेश्वर के बेटे यीशु मसीह जिन का संदेश
सिलवानुस, तीमुथियुस और मैंने तुम्हें दिया,
उसमें कभी हाँ और कभी ना दोनों नहीं थे,
लेकिन उसमें हाँ ही हाँ था। 20 परमेश्वर
के जितने भी वायदे हैं, वे सभी उन्हीं में
हाँ के साथ हैं। इसलिए उनके द्वारा वे पूरे
भी किए जाएँगे ताकि हमारे द्वारा परमेश्वर
को आदर सम्मान मिले। 21 जो हमें तुम्हारे
साथ मसीह में मज़बूत करते हैं और जिन्होंने
हमारा अभिषेक किया है, वह परमेश्वर हैं।
22 उन्होंने हम पर मुहर भी लगा दी है और
पवित्र आत्मा को बयाने में हमारे मनों में दिया
है।
23 परमेश्वर को गवाह ठहराकर मैं कहता
हूँ कि अब तक मैं कुरिन्थुस में इसलिए नहीं
आया ताकि तुम कठोर डाँट फटकार से बच
जाओ 24 यह नहीं कि हम तुम्हारे विश्वास के
बारे में तुम पर हक जताना चाहते हैं। लेकिन
हम तुम्हारी खुशी के लिए तुम्हारे साथ काम
करते हैं, क्योंकि तुम विश्वास ही से बने रहते
हो।

2 मैं यह इरादा कर चुका था कि आने पर
तुम लोगों को उदास न करूँ। 2 क्योंकि
यदि मैं तुम्हें उदास करूँ तो मेरे मन को खुश
करने वाला कौन होगा, केवल वही जिसे मैंने
उदास किया। 3 मैंने यही बात तुम्हें इसलिए
लिखी कि कहीं ऐसा न हो कि मेरे आने पर
जिन से खुशी मिलनी चाहिए, मैं उन से दुख
पाऊँ। मुझे तुम सभी पर इस बात का भरोसा
है कि जो मेरी खुशी है वह तुम सब की है।
4 मैंने बड़े दुख से मन की पीड़ा से बहुत आँसू
बहा-बहा कर तुम्हें लिखा था, इसलिए नहीं
कि तुम्हें दुख हो, लेकिन इसलिए कि तुम मेरे
उस प्रेम को जानो, जो तुम्हारे लिए है।
5 यदि तुम में से किसी ने निराश किया है तो
केवल मुझे ही नहीं, लेकिन थोड़ा बहुत तुम
सभी को निराश किया है। 6 ऐसे व्यक्ति के
लिए वह सज़ा बहुत है जो बहुमत से ठहरायी
गयी। 7 अच्छा यह है कि उसका अपराध
माफ़ किया जाए और उसे तसल्ली भी दी जाए
ताकि ऐसा इन्सान बहुत ज़्यादा निराशा से न
भर जाए। 8 इसलिए मेरी तुम से यह बिनती
है कि उसे अपने प्रेम का सबूत दो। 9 क्योंकि
मैंने तुम्हें इसलिए भी लिखा था कि तुम्हें जाँच
लूँ कि तुम मेरी सभी बातों को मानने के लिए
तैयार हो या नहीं। 10 जिस किसी का तुम
कुछ माफ़ करते हो, उसे मैं भी माफ़ करता
हूँ। क्योंकि मैंने भी जो माफ़ किया है, तो वह
तुम्हारी वजह से मसीह की जगह में होकर
किया है। 11 ताकि शैतान हमें धोखा न दे सके
क्योंकि उसकी चतुराई से हम अनजान नहीं।
12,13 हालांकि प्रभु ने मेरे लिए एक नया
दरवाज़ा खोला है कि मैं दोबारा आ सका
लेकिन मेरा मन बेचैन था, क्योंकि मेरे भाई
तीतुस से मेरी मुलाकात नहीं हो पायी।
इसलिए मैंने विदाई ली और मकिदुनिया की
ओर बढ़ गया।
14 लेकिन परमेश्वर की बड़ाई हो जो
मसीह में हमेशा हम को जीत के जुलूस में
लिए चलते हैं। और अपने ज्ञान की खुशबू
हमारे द्वारा सब जगह फैलाते हैं। 15 क्योंकि

हम परमेश्वर के निकट मुक्ति पाने वालों
और मुक्ति न पाने वालों[a] दोनों तरह के
लोगों के लिए मसीह की खुशबू हैं। 16 कुछ
के लिए मरने के निमित्त मौत की गंध और
कुछ के लिए जीवन के निमित्त जीवन की
खुशबू। क्या कोई इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी लेने
के लायक है? 17 क्योंकि हम उन बहुत से
लोगों की तरह नहीं हैं जो परमेश्वर के वचन
में मिलावट करते हैं। लेकिन मन की सच्चाई[b]
से और परमेश्वर की ओर से परमेश्वर को
मौजूद जान कर मसीह में बोलते हैं।

3 क्या हम ने फिर अपनी बड़ाई करनी
शुरू कर दी? या हमें दूसरे लोगों की
तरह सिफ़ारिश की चिट्ठियाँ तुम्हारे पास लानी
हैं या तुम से लेनी हैं? 2 हमारे मनों पर लिखी
हुयी चिट्ठी तो तुम ही हो। सब लोग उन्हें
पहचानते और पढ़ते हैं। 3 यह दिख ही रहा
है कि तुम मसीह की चिट्ठी हो, जिस को
हम सेवकों ने न तो स्याही से, न पत्थर की
पटियाओं पर, लेकिन जीवित परमेश्वर के
आत्मा से दिल की मांस रूपी पटियों पर
लिखा है।

4 मसीह में होकर परमेश्वर पर हमारा ऐसा
ही भरोसा है। 5 यह नहीं कि हम अपने आप
में इस लायक हैं, हमारी योग्यता परमेश्वर
के कारण ही है। 6 उन्हीं ने हमें नयी वाचा के
सेवक होने के योग्य बनाया। शब्द के सेवक
नहीं लेकिन आत्मा[c] के, क्योंकि शब्द मारता
है, किन्तु आत्मा जीवन देता है।

7 यदि मौत की वह वाचा जिस के अक्षर
पत्थरों पर खोदे गए थे, इतने प्रकाश से दमक
रही थी, कि मूसा के चेहरे पर के तेज के
कारण जो कम होता जा रहा था, इस्राएली
उसके चेहरे को देख तक नहीं सकते थे, 8 तो
आत्मा की वाचा और ज़्यादा तेज से भरी
क्यों न होगी? 9 क्योंकि जब दोषी ठहराने
वाली वाचा तेज से भरी थी, तो धर्मी[d] ठहराने
वाली वाचा और अधिक तेज से भरी क्यों
नहीं होगी? 10 नयी वाचा की भव्य[e] महिमा
से यदि पुरानी वाचा की महिमा की तुलना
की जाए तो उसके सामने पुरानी वाचा ठहर
ही नहीं सकती। 11 क्योंकि जब तेजोमय की
चमक कम होती जाती थी तो जो स्थिर[f]
रहेगा, वह और ज़्यादा चमक[g] से क्यों नहीं
दमकेगा?

12 इसलिए ऐसी आशा रख कर हम हिम्मत
से बोलते हैं। 13 मूसा की तरह नहीं जिस ने
अपने चेहरे पर कपड़ा डाल लिया था, ताकि
इस्राएली उस कम होते हुए तेज के समाप्त
होने को न देख सकें। 14 लेकिन उनकी अक्ल
मारी गयी, क्योंकि आज तक मूसा द्वारा
पहुँचाया नियमशास्त्र[h] पढ़ते समय उनके मनों
पर वही पर्दा पड़ा रहता है, लेकिन मसीह
में वह उठ जाता है। 15 आज तक जब कभी
मूसा की किताब पढ़ी जाती है, तो उनके मनों
पर पर्दा पड़ा रहता है। 16 लेकिन जब कभी
उनका दिल प्रभु की तरफ़ मुड़ेगा, तब वह
पर्दा उठ जाएगा 17 प्रभु तो आत्मा है और
जहाँ कहीं प्रभु का आत्मा है, वहीं आज़ादी
है। 18 लेकिन जब हम सब के उघाड़े चेहरे से
प्रभु का तेज[i] इस तरह दिखता है, जिस प्रकार
आइने में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा हैं हम
उस तेजस्वी रूप में थोड़ा-थोड़ा बदलते जाते
हैं।

4 इसलिए जब हम पर ऐसी दया[j] हुयी,
कि हमें यह सेवा मिली, तो हम हार

[a] **2.15** नाश होने वालों [b] **2.17** ईमानदारी [c] **3.6** पवित्र आत्मा [d] **3.9** निर्दोष [e] **3.10** अद्वितीय
[f] **3.11** कायम [g] **3.11** तेज [h] **3.14** आज्ञाएँ, नियम आदि [i] **3.18** प्रकाश [j] **4.1** कृपा

नहीं मानते 2 लेकिन हम ने शर्म के छिपे हुए
कामों को छोड़ दिया है। हम न चालाकी
से जीते हैं और न परमेश्वर के वचन में
मिलावट करते हैं। लेकिन हम सच्चाई को
सामने रखकर, परमेश्वर के सामने[a] हर एक
इन्सान के विवेक में अपनी भलाई बैठाते
हैं। 3 लेकिन यदि हमारे सुसमाचार पर पर्दा
पड़ा है तो यह बर्बाद हो जाने वाले लोगों
के कारण है। 4 उन विश्वास न करने वालों
के लिए जिन की बुद्धि को इस दुनिया के
ईश्वर ने अँधा कर दिया है, ताकि मसीह जो
परमेश्वर के प्रतिरूप हैं, उनके प्रकाशमय
सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमक सके।
5 क्योंकि हम अपना नहीं लेकिन यीशु मसीह
का संदेश देते हैं कि वह प्रभु हैं। हम अपने
बारे में बताते हैं कि हम यीशु मसीह के कारण
तुम्हारे सेवक हैं। 6 इसलिए कि परमेश्वर
ही हैं, जिन्होंने कहा, “अँधेरे में रोशनी हो
जाए।” उन्होंने ही इस रोशनी को हमारे दिलों
में चमकाया, ताकि हम प्रभु यीशु में परमेश्वर
के व्यक्तित्व[b] को देख सकें।

7 हमारे पास यह खज़ाना मिट्टी के बर्तनों
में है, ताकि यह मालूम पड़ जाए कि यह
असाधारण सामर्थ्य परमेश्वर की ओर से है
और हम इसके स्त्रोत नहीं हैं। 8 हम सभी ओर
से सताव सह रहे हैं, लेकिन पिस नहीं गए।
उलझन में तो पड़ते हैं, लेकिन निराश नहीं
होते। 9 हमें सताया तो जाता है, लेकिन त्यागे
नहीं जाते। गिराए तो जाते हैं, लेकिन मिट
नहीं जाते। 10 जिस तरह से यीशु मारे गए,
उसी तरह हर समय हम मारे जाने के खतरे
में रहते हैं, ताकि यीशु[c] का जीवन हमारी देह
से दिखायी देता रहे। 11 हम जीते जी हमेशा
यीशु की वजह से मौत के हवाले किए जाते
हैं, ताकि यीशु का जीवन हमारी मरणशील
देह में प्रगट होता रहे। 12 हम तो मौत का
सामना करते रहते हैं, लेकिन तुम्हें आत्मिक
लाभ होता है।

13 इसलिए कि हम में वही विश्वास की
आत्मा है जिस के बारे में लिखा है, “मैंने
विश्वास किया, इसलिए मैंने कहा।” इस
कारण हम भी विश्वास करते हैं, इसलिए
बोलते हैं। 14 क्योंकि हम जानते हैं कि
जिन्होंने[d] प्रभु यीशु मसीह को जिलाया, वही
हमें भी यीशु में जिलाएँगे। वह हमें तुम्हारे
साथ अपनी उपस्थिति में खड़ा होने देंगे।
15 सब कुछ तुम्हारे फ़ायदे के लिए ही है।
जैसे-जैसे परमेश्वर का अनुग्रह ज़्यादा लोगों
तक पहुँचता जाता है, धन्यवाद में भी बढ़ती
होती जाती है। इस तरह से परमेश्वर की
महिमा अधिक होती है।

16 इसलिए हम हताश नहीं होते, हालांकि
हमारी देह कमज़ोर होती जा रही है, फिर
भी हमारा भीतरी जीवन[e] दिन प्रतिदिन नया[f]
होता जा रहा है। 17 क्योंकि हमारा क्षण भर
का कम सताव[g] हमारे लिए बहुत ज़रूरी और
सदा काल की महिमा[h] उत्पन्न करता जाता
है। 18 क्योंकि हम दिखने वाली बातों पर
नहीं, लेकिन जो नहीं दिखता, उस पर अपना
ध्यान लगाए हुए हैं। क्योंकि देखी चीजें कुछ
समय की हैं और जो दिख नहीं रहा है, वह
सदा काल[i] के लिए है।

5 हमें मालूम हैं कि तम्बू की तरह हमारी
यह देह उतारी और लपेटी जाएगी। हमें
परमेश्वर की ओर से एक नया घर[j] मिलेगा।
एक ऐसा घर जिसे हाथों से बनाया नहीं गया
होगा, लेकिन अनन्तकालिक घर। 2 इस तंबू

[a] **4.2** मौजूदगी में [b] **4.6** स्वभाव और चरित्र आदि [c] **4.10** जो जी उठे [d] **4.14** परमेश्वर ने [e] **4.16** मनुष्यत्व
[f] **4.16** मज़बूत [g] **4.17** दुख [h] **4.17** शान, आदर, अधिकार [i] **4.18** हमेशा [j] **5.1** शरीर

में हम कराहते हैं और स्वर्गिक घर को पहनने
के लिए लालायित रहते हैं। 3 हम स्वर्गिक
देह को ज़रूर पहिनेंगे। हम मात्र देहरहित
आत्मा नहीं होंगे। 4 इस देह में हम बोझ से
दबे कराहते रहते हैं। यह नहीं कि हम मर
जाना चाहते हैं, ताकि इस पहनी हुयी देह को
उतार सकें। लेकिन यह कि हम अपनी नयी
देह को पहनना चाहते हैं, ताकि इस मरणहार
देह को अमरता निगल ले। 5 जिस ने हमें इस
उद्देश्य के लिए तैयार किया है, वह परमेश्वर
हैं। उन्हीं ने हमें पवित्रात्मा बयाने में दिया है।
6 इसलिए हम हमेशा निडर रहते हैं। हम
जानते हैं कि जब हम इस धरती पर ज़िन्दा हैं
तो हम(जी उठे) यीशु के साथ नहीं हैं। 7 बिना
देखे हुए सिर्फ़ भरोसा रख कर ही हम जीवित
हैं। 8 हम उमंग[a] से भरे हुए हैं और हमारी चाह
तो यह है कि इस देह से मुक्त हो जाएँ और
प्रभु के साथ ही रहें। 9 चाहे हम इस देह में हैं
या नहीं, खास बात है - प्रभु को खुश करना।
10 हम सभी को एक दिन प्रभु यीशु के इन्साफ़
के तख्त के सामने खड़े होना पड़ेगा, ताकि
देह में किए गए अच्छे और बुरे कामों का
हिसाब दें।
11 इसलिए कि हम जानते हैं कि प्रभु के
डर में जीना क्या है, हम लोगों के सामने
सच्चाई रखते हैं। परमेश्वर और तुम्हें मालूम
है कि इस में हमारी नियत क्या है। 12 ऐसा
कह कर हम तुम्हारी वाह-वाह की अपेक्षा
नहीं कर रहे हैं लेकिन हम चाहते हैं कि तुम
हमारे ऊपर घमण्ड कर सको, ताकि उनको
जवाब दे सको जो दिल के भीतर की बातों
के बजाए दिखावटी बातों पर मन लगाते हैं।
13 यदि हम जोशीले हैं, तो परमेश्वर के लिए
हैं। यदि हमारा मन ठिकाने पर है, तो इस से
तुम्हें फ़ायदा है। 14 मसीह का प्रेम हम को
बेबस कर देता है। और हम इस बात से
कायल हैं कि यीशु मर गए थे इसलिए हम भी
अपने पुराने जीवन[b] के लिए खत्म हो चुके हैं।
15 और वह[c] इसलिए सब के लिए मरे कि जो
जीवित हैं, वे भविष्य में अपने लिए न जिएँ,
लेकिन उनके[d] लिए जो उनके[e] लिए मरे और
फिर से जी उठे।
16 इसलिए अब से हम किसी को दुनियावी
दृष्टिकोण[f] के अनुसार नहीं देखेंगे। हालांकि
हम ने मसीह को भी शरीर के अनुसार
देखा था, लेकिन अब से ऐसा नहीं जानेंगे।
17 इसलिए यदि कोई मसीह पर विश्वास
ला चुका है, तो वह एक नयी रचना है।
पुरानी बातें बीत गयी और सब बातें नई
हो गई हैं[g] 18 ये सभी बातें[h] परमेश्वर की
ओर से हैं, जिन्होंने यीशु मसीह के द्वारा
अपने साथ हमारा मेल कर लिया। उन्हीं
ने हमें यह काम दिया कि हम दूसरे लोगों
का सम्बन्ध परमेश्वर से करा दें। 19 अर्थात्
परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ
दुनिया का मेल-मिलाप कर लिया और लोगों
के अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया और
यही मेल[i] के संदेश को देने का काम हमारे
सुपुर्द कर दिया। 20 इसलिए हम परमेश्वर
के राजदूत हैं, मानो हम मसीह में होकर बोल
रहे हैं, “परमेश्वर के साथ अच्छे सम्बन्ध
बना लो।” 21 जो[j] अपराध से अछूते थे, उन्हें
परमेश्वर ने हमारे लिए अपराध बना दिया,
ताकि हम उन में होकर परमेश्वर की सच्चाई
बन जाएँ।

6 इसलिए कि हम सभी साथ में काम
करने वालों की तरह एक साथ मिल कर

[a] **5.8** साहस, हिम्मत [b] **5.14** परमेश्वर रहित जीवन [c] **5.15** यीशु [d] **5.15** यीशु के [e] **5.15** लोगों के
[f] **5.16** शरीर [g] **5.17** नया जीवन शुरू हो गया है [h] **5.18** नयी बातें [i] **5.19** सम्बन्ध जोड़ने [j] **5.21** यीशु

परमेश्वर का काम कर रहे हैं, हम यह भी
निवेदन करते हैं, कि परमेश्वर के अनुग्रह
को बेकार न जाने दें। 2 परमेश्वर ने कहा
था, “सही वक्त पर मैंने तुम्हारी सुन ली और
मुक्ति के दिन मैंने तुम्हारी मदद की।” देखो,
यही वह सही वक्त है, अभी ही मुक्ति का
समय है।
3 हम इस तरह जीवन जी रहे हैं, कि किसी
बात में किसी के लिए रुकावट का कारण
न बनें। यह भी कि किसी को हमारी सेवा में
कोई खोट न दिखे। 4 सब कुछ जो हम करते
हैं, हम यह दिखाते हैं, कि हम परमेश्वर
के सच्चे सेवक हैं, बड़े धीरज में, सताव में,
गरीबी में, संकटों में। 5 पिटाई में, जेलखाने
में डाले जाने में, दंगों में, परेशानियों में,
मेहनत करने में, जागने में, भूखा रहने में।
6 पवित्रात्मा में, ज्ञान में, धीरज में, कृपालुता
में, पवित्र आत्मा में, सच्चे प्रेम में, 7 सच्चाई के
संदेश में, परमेश्वर की शक्ति में, दाएँ-बाएँ
आत्मिक हथियारों को लेकर 8 इज़्ज़त और
बेइज़्ज़ती में, यश और अपयश में, बदनामी
और बड़ा नाम पाने में, धोखा देने वालों
की तरह दिखते हैं, लेकिन ऐसे हैं नहीं।
9 अनजानों की तरह हैं, लेकिन मशहूर हैं,
मरते हुओं की तरह हैं, लेकिन फिर भी ज़िन्दा
हैं, सज़ा पाए हुओं[a] की तरह हैं, फिर भी जान
से मारे नहीं जाते। 10 शोक करने वाले दिखते
हैं, लेकिन हमेशा खुश रहने वाले हैं। दिखने
में गरीब हैं, लेकिन दूसरों को अमीर बना देते
हैं। हम दिखने में फक्कड़ हैं लेकिन सब कुछ
रखते हैं।
11 हे कुरिन्थियों, हम ने सब कुछ ईमानदारी
से कह डाला है। हमारा दिल तुम्हारे लिए
खुला हुआ है। 12 हम ने अपने प्रेम में किसी
तरह की कमी नहीं रखी है, लेकिन तुम बहुत
नाप-तौल कर प्रेम दिखाते हो। 13 तुम्हें अपने
बच्चों की तरह जान कर मैंने तुम से बातचीत
की - तुम भी खुले दिल से प्रेम दिखाओ।
14 जो लोग मसीह पर विश्वास नहीं लाए
हैं, उनके साथ साझे में कुछ मत करो।
इसलिए कि धार्मिकता[b] और अंधकार[c] में
एकता कैसे बनी रह सकती है? या रोशनी
और अँधेरा एक साथ कैसे आ सकते हैं?
15 मसीह और शैतान कैसे एक सहमति बना
सकते हैं? या मसीही और गैर मसीही का
क्या सम्बन्ध? 16 क्या परमेश्वर के भवन
और मूर्तियों के बीच कोई समझौता संभव
है? क्योंकि हम[d] परमेश्वर का जीवित भवन
हैं। जैसा कि परमेश्वर ने कहा भी था, “मैं उन
में रहूँगा और उनके बीच चला-फिरा करूँगा।
मैं उनका परमेश्वर होऊँगा और वे मेरे लोग
होवेंगे।” 17 इसलिए प्रभु कहते हैं, “उनके
बीच में से निकलो और अलग हो जाओ और
जो कुछ अशुद्ध है, उसे मत छुओ, तब मैं तुम्हें
अपनाऊँगा। 18 “मैं तुम्हारा पिता होऊँगा, तुम
मेरे बेटे-बेटियाँ होगे” सर्वशक्तिमान प्रभु का
कहना यही है।

7 हे प्रियो, इसलिए कि हमें कीमती वायदे[e]
मिले हैं, तो आओ हम उन सब बातों[f] से
अपने आपको शुद्ध करें जो हमारी देह और
आत्मा को अशुद्ध कर सकती हैं। इस तरह
से हम परमेश्वर का भय रखते हुए पवित्रता
की ओर बढ़ें।
2 हमारे लिए अपने दिलों को खुला रखो,
हम ने न किसी का बुरा किया, न किसी को
बर्बाद किया और न ही किसी से फ़ायदा
उठाया। 3 मैं तुम्हें दोषी ठहराने के लिए यह

[a] **6.9** मार खाने वालों [b] **6.14** उचित करने वालों [c] **6.14** अनुचित करने वालों [d] **6.16** चर्च [e] **7.1** प्रतिज्ञाएँ
[f] **7.1** मलिनता

नहीं कह रहा हूँ। क्योंकि मैं पहले ही से
यह कह चुका हूँ कि तुम हमारे दिल में
इस तरह बस गए हो, कि हम तुम्हारे साथ
जीने और मरने को तैयार हैं। 4 मुझे तुम पर
काफ़ी भरोसा है और घमण्ड भी। हमारी सारी
परेशानियों[a] के बावजूद तुमने हमें साहस
दिया और खुश किया।

5 जब हम मकिदुनिया आए थे, हमारी देह
को कुछ सुकून नहीं मिला। हम चारों तरफ़
से सताव[b] से घिरे हुए थे - बाहर संघर्ष था
और मन में डर। 6 लेकिन परमेश्वर ने जो
हताश हुए लोगों की हिम्मत बढ़ाते हैं, तीतुस
के आने पर हमारी हिम्मत बढ़ायी। 7 सिर्फ़
उसके आने ही से हमें प्रोत्साहननहीं मिला,
लेकिन इस कारण भी कि तुमने उसका
साहस बढ़ाया था। मेरी खुशी और ज़्यादा
इसलिए भी बढ़ गयी, क्योंकि उसने हमारे
प्रति तुम्हारी लगन, तुम्हारे दुख और हमारे
लिए चिन्ता के बारे में भी खबर दी।

8 क्योंकि हालांकि मैंने अपने पहले खत
से तुम्हें शोकित किया था, लेकिन उससे
पछताता नहीं, जैसा कि पहले पछताता था।
क्योंकि मैं देखता हूँ कि उस पत्र से तुम्हें
जो शोक हुआ वह थोड़ी देर के लिए ही
था। 9 अब मैं खुश हूँ लेकिन इसलिए नहीं
कि तुम्हें शोक पहुँचा, लेकिन इसलिए कि
तुमने उस शोक की वजह से मन बदला।
क्योंकि तुम्हारा शोक परमेश्वर की इच्छा
के अनुसार था कि हमारी तरफ़ से तुम्हें
किसी बात में नुकसान न पहुँचे। 10 जो शोक[c]
परमेश्वर की ओर से होता है, वह मन
बदलाव[d] लाता है और इसका परिणाम उद्धार
है। ऐसा शोक हमारे अंदर पछतावा[e] नहीं
उत्पन्न करता है, लेकिन दुनियावी शोक मौत[f]
लाता है। 11 देखो, इस परमेश्वर की ओर से
शोक[g] ने तुम्हारे जीवन में कितना बदलाव
पैदा किया है - ऐसी तत्परता अर्थात् अपने
को निर्दोष साबित करने की चाह, कितना
रोष, कितना डर, कितनी लालसा, कितना
जोश तथा सज़ा देने[h] की इच्छा उत्पन्न हो
गयी है। तुमने इस तरह से यह साबित कर
दिया है, कि तुम इस बात में निर्दोष हो।

12 तुम्हें लिखे जाने में मेरा उद्देश्य यह नहीं
था कि किस ने अन्याय किया, किस के
साथ अन्याय हुआ, इस पर गौर किया जाए।
लेकिन यह कि परमेश्वर की निगाह में यह
साफ़ दिख जाए कि तुम हमारे प्रति कितने
गंभीर हो। 13 इसलिए हमें तसल्ली मिली।
इसके साथ ही तीतुस की खुशी देख कर
हम और भी आनन्दित हो उठे, क्योंकि तुम
सब से उसका जी हरा-भरा हो गया था।
14 इसलिए कि यदि मैंने तुम्हारे बारे में उसके
सामने कुछ घमण्ड दिखाया, तो शर्मिन्दा न
हुआ। परन्तु जिस तरह से हम ने तुम से सब
बातें सच-सच कह दी थीं, वैसे ही हमारा
घमण्ड दिखाना तीतुस के सामने भी सच
निकला। 15 जब उसको तुम्हारे आज्ञाकारी
होने की याद आती है कि कैसे तुमने उसे
आदर सम्मान से अपनाया, तो उसका तुम्हारे
प्रति प्यार उमड़ पड़ता है। 16 मुझे बहुत खुशी
है, क्योंकि मैं तुम पर पूरा भरोसा रख सकता
हूँ।

8 हे भाईयो-बहनो, हम अब परमेश्वर की
उस महान कृपा[i] के बारे में बताना चाहते
हैं, जो मकिदुनिया की कलीसियाओं[j] पर
हुआ है। 2 हर तरह के क्लेश द्वारा उनकी
जाँच में उनकी बड़ी खुशी और भारी गरीबी

[a] **7.4** कष्टों, सताव [b] **7.5** परेशानियों [c] **7.10** दुख [d] **7.10** पश्चाताप [e] **7.10** आत्मग्लानि [f] **7.10** बर्बादी
[g] **7.11** परमेश्वर भक्ति शोक [h] **7.11** न्याय [i] **8.1** अनुग्रह [j] **8.1** चर्चों

में उनकी उदारता बहुत बढ़ गयी। 3 मैं उनके
बारे में साक्षी देता हूँ कि उन्होंने अपनी
योग्यता से अधिक दिया और वह भी अपनी
मर्ज़ी से। 4 इस दान में और पवित्र लोगों की
मदद करने में हिस्सेदार बनने के लिए उन्होंने
बार-बार हमसे बिनती की। 5 हमारी आशा से
बढ़ कर उन लोगों ने पहले अपने आपको प्रभु
के प्रति समर्पित किया और बाद में परमेश्वर
की इच्छा से हमारे प्रति भी अपना समर्पण
किया। 6 इसलिए हम ने तीतुस को सलाह दी
कि जैसी शुरूआत उसने पहले की थी, वैसी
ही तुम्हारे बीच में इस दान के काम को भी
पूरा कर ले। 7 इसलिए जिस तरह तुम लोग
हर दायरे में विश्वास, वचन, ज्ञान, सब तरह
की कोशिश और उस प्रेम में जो हमसे रखते
हो, बढ़ते जाते हो, वैसे ही इस दान के काम
में भी आगे बढ़ते जाओ। 8 मैं आज्ञा की तरह
नहीं लेकिन दूसरों के जोश से तुम्हारे प्यार
की सच्चाई को परखने के लिए कहता हूँ।

9 तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह
को जानते हो कि वह धनी होने के बावजूद
तुम्हारे लिए गरीब बन गए, ताकि उनकी
गरीबी से तुम समृद्ध हो जाओ।

10 इस बात में मेरी सलाह यह है, यह तुम्हारे
लिए फ़ायदेमंद है कि जो कुछ तुमने पिछले
साल शुरू किया और जिस के चाहने में भी
तुम ही प्रथम[a] थे। 11 तुम्हारे लिए अच्छा यह
है कि अब यह काम तुम पूरा करो। तुम्हारी
शुरू में दिखायी गयी तत्परता तुम्हारे दान
से मेल खाए और वह भी तुम्हारी पूंजी के
अनुसार हो। 12 क्योंकि जहाँ मन से दिया
जाता है, वह ग्रहण योग्य होता है। जो तुम्हारे
पास है उस आधार पर न कि इस पर कि
किसी के पास क्या नहीं है।

13 मैं यह नहीं कहना चाह रहा हूँ कि तुम्हारे
दान से दूसरों को राहत मिले और तुम कमी
झेलते बैठो। 14 इस समय तुम्हारी अधिकता[b]
से उन लोगों की ज़रूरतें पूरी होती हैं, ताकि
भविष्य में उन लोगों की अधिकता[c] से
तुम्हारी ज़रूरतें पूरी हो सकें और बराबरी हो
जाए। 15 जैसा कि लिखा है, जिस ने ज़्यादा
बटोरा[d] उसके पास बहुत ज़्यादा नहीं बचा।
जिस ने कम बटोरा, उसके लिए उतना ही
काफ़ी था[e]।

16 मैं परमेश्वर को धन्यवाद देता हूँ कि
जिस तरह से तुम्हारे लिए मुझे चिन्ता है,
ठीक उसी तरह तीतुस को भी है। 17 उसने
हमारी यह बिनती[f] मान ली कि वह तुम
लोगों से मिलेगा। सच्चाई तो यह है कि
वह खुद तुम लोगों से मिलने को लालायित
था। 18 सुसमाचार सुनाने के सम्बन्ध में सभी
कलीसियाओं में बहुचर्चित भाई को हम
उसके साथ भेज रहे हैं। 19 भेंट पहुँचाए जाने
के लिए की गयी यात्रा पर जाने के लिए,
उसे चर्च ने नियुक्त किया - एक सेवा जो
प्रभु की महिमा करती है और हमारी मदद
करने की लालसा को दिखाती है। 20 ऐसा
हम ने इसलिए किया ताकि स्वेच्छा-दान को
लोगों तक पहुँचाने में सावधानी बरती जाए
और कोई हमारे ऊपर उँगली न उठा सके।
21 इसलिए कि हमें इस बात की चिन्ता है कि
वही किया जाए जो न केवल प्रभु की दृष्टि में
सही है। लेकिन मनुष्यों की दृष्टि में भी।

22 हम ने उसके साथ अपने भाई को भी
भेजा है जिसे बार-बार जाँचा गया और बहुत
सी बातों में जोशीला है। अभी तुम्हारे ऊपर
उसको बड़ा भरोसा होने की वजह से उसका
जोश भी बढ़ गया है। 23 यदि कोई तीतुस

[a] **8.10** पहले [b] **8.14** समृद्धि [c] **8.14** समृद्धि [d] **8.15** जमा किया [e] **8.15** या कमी नहीं हुयी [f] **8.17** सलाह

के बारे में पूछे तो वह मेरा साथी और तुम लोगों के लिए मेरा सहकर्मी है। यदि सवाल दूसरे भाईयों का है, तो वे मण्डलियों[a] के भेजे हुए मसीह को आदर देने वाले हैं। 24 इसलिए अपना प्यार और हमारा वह घमण्ड जो तुम्हारे बारे में है, उसको मण्डलियों[b] के सामने सबूत के साथ दिखाओ।

9 मेरे लिए तुम को पवित्र लोगों की इस सेवा के बारे में लिखना ज़रूरी नहीं है। 2 क्योंकि मदद करने की तुम्हारी लालसा[c] को मैं पहले ही से जानता हूँ। मैं मकिदुनिया के सभी चर्च[d] में तुम्हारी तारीफ़ करता रहा हूँ कि एक साल पहले ही तुम यूनान[e] के लोग दान देने के लिए तैयार थे। सच पूछा जाए तो तुम्हारे जोश ने बहुत से विश्वासियों को दान देने के लिए प्रोत्साहित किया। 3 लेकिन मैं इन भाईयों को भेज रहा हूँ ताकि इस बारे में तुम्हारे लिए हमारा आनन्द बेकार न ठहरे। जैसा मैंने उन से कहा है, वैसे ही तुम तैयार रहो। 4 इसलिए कि यदि कोई मकिदुनी मेरे साथ आने पर तुम्हें तैयार न पाए, तब हमें तुम्हारे ऊपर किए गए विश्वास के कारण शर्मिन्दगी उठानी पड़ेगी। 5 इसलिए मैंने यह ज़रूरी समझा है, कि ये भाई पहले ही से तुम्हारे पास आएँ। और तुम्हारे प्रतिज्ञा किए हुए स्वेच्छित दान[f] पहले ही से इकट्ठा कर लें।

6 जो इन्सान बड़ी मात्रा[g] में बोता है, वह बड़ी मात्रा में काटेगा। जो उदारता[h] से बोता है, वह ज़्यादा काटेगा भी। 7 हर एक जन जैसा मन में इरादा करता है, उसी तरह से दान दे, न ही कुढ़-कुढ़ के, न दबाव से, क्योंकि परमेश्वर प्रसन्नता से देने वाले से प्रेम करते हैं। 8 परमेश्वर सब तरह का अनुग्रह तुम्हें भरपूरी से दे सकते है। तब हर समय, सब कुछ जो तुम्हारी ज़रूरत है, पूरी होगी और हर एक भले काम के लिए तुम्हारे पास बहुत कुछ होगा। 9 जैसा कि लिखा है, "उसने बहुत दूर बिखराया, उसने गरीबों को दिया, उसके अच्छे कामों को हमेशा तक याद किया जाएगा ।

10 इसलिए परमेश्वर जो बोने वाले को बीज और खाने के लिए रोटी देते हैं, तुम्हें बीज मुहैया कराने के साथ उसे कई गुना बढ़ाएँगे। और तुम में उदारता की बड़ी फ़सल[i] पैदा करेंगे। 11 तुम हर तरह से भरपूर किए जाओगे, ताकि हर मौके पर उदार बन सको और जब हम तुम्हारे दान को ज़रूरतमन्द लोगों तक पहुँचाए, तो वे परमेश्वर को धन्यवाद दें।

12 क्योंकि इस आर्थिक सहायता का काम[j] पवित्र लोगों की मात्र ज़रूरतों ही को पूरा नहीं करती हैं, लेकिन आनन्द के साथ परमेश्वर को बहुत धन्यवाद दिया जाना भी होता है। 13 इस सेवा का नतीजा यह होगा कि लोग परमेश्वर की बड़ाई करेंगे। इसलिए कि सभी विश्वासियों के लिए तुम्हारी उदारता यह साबित करेगी कि तुम मसीह के सुसमाचार को अपनाकर उसके अधीन रहते हो और उनको[k] तथा सब के लिए उदारता से दान देते हो। 14 वे लोग तुम्हें

[a] **8.23** चर्चों [b] **8.24** चर्चों [c] **9.2** चाहत [d] **9.2** कलीसियाओं [e] **9.2** अखया [f] **9.5** या उदारता के फल
[g] **9.6** बड़े पैमाने [h] **9.6** बड़े मन [i] **9.10** धार्मिकता की फ़सल [j] **9.12** सेवा [k] **9.13** गरीब विश्वासियों

अपनी प्रार्थनाओं में याद करते हैं, इसलिए
कि तुम पर परमेश्वर का बड़ा ही अनुग्रह है,
तुम्हारी लालसा करते रहते हैं।
15 जिस दान[a] की बड़ाई शब्दों में नहीं
की जा सकती, उसके लिए परमेश्वर का
धन्यवाद हो।

10 यीशु मसीह की सी नम्रता और
दीनता से मैं तुम लोगों से बिनती
करता हूँ - हालाँकि तुम्हारा यह भ्रम है कि
व्यक्तिगत रीति से मैं डरपोक हूँ, लेकिन
लिखी हुयी चिट्ठी से बहुत निडर दिखता
हूँ। 2 ठीक है, तुम में से जो लोग सोचते
हैं कि हम संसारिक तौर-तरीके के अनुसार
जीते हैं, उन से मेरी बिनती है कि वे झूठे
कठोर तरीके से पेश आने पर मजबूर न
करें। 3 क्योंकि हालांकि हम इन्सान[b] तो हैं,
लेकिन हमारी लड़ाई का तरीका दुनियावी
नहीं है। 4 क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार
दुनिया में इस्तेमाल किए जाने वाले हथियार
नहीं लेकिन किलों को[c] तोड़ डालने और
झूठे तर्क-वितर्क को बर्बाद करने के लिए
परमेश्वर द्वारा सामर्थी हैं। 5 इसलिए हम
परमेश्वर के ज्ञान के विरोध में उठने वाली
हर एक कल्पना और हर एक ऊँची बात का
खण्डन करते हैं और हर एक भावना को
कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं।
6 जब तुम पूरी तरह से आज्ञा मानने के लिए
तैयार हो, तब हम अनाज्ञाकारिता के हर एक
काम को दण्डित करने के लिए तैयार रहते
हैं।
7 तुम्हारी आँखें बाहरी बातों पर हैं। यदि
किसी को यह भरोसा है कि वह मसीह का है
तो उसे यह भी जान लेना चाहिए कि जैसा वह
मसीह का है, हम भी मसीह के हैं। 8 तुम्हें लग
सकता है कि प्रभु द्वारा दिए गए अधिकार
के बारे में हम ज़्यादा घमण्ड कर रहे हैं।
लेकिन हमारा अधिकार तुम्हारी तरक्की के
लिए है न कि नुकसान के लिए। इसलिए
मैं अपने अधिकार के इस्तेमाल के बारे में
शर्मिन्दा न होऊँगा। 9 अपनी चिट्ठियों से मैं
तुम्हें डरा नहीं रहा हूँ। 10 क्योंकि कुछ कहते
हैं, "उसकी चिट्ठियों में वह वज़नदार और
ताकतवर दिखता है लेकिन उसके बोलने
में कोई दम नहीं है। ऐसे व्यक्ति को यह
जान लेना चाहिए कि जब हम आएँगे, तब
उतनी ही प्रभावशाली रीति से बातें करेंगे,
जैसा हम अपनी चिट्ठियों में लिखते हैं। 11 जो
ऐसा समझता है, वह यह जान रखे कि जैसे
पीठ पीछे चिट्ठियों में हमारे वचन हैं, वैसे ही
तुम्हारे सामने हमारे काम होंगे।
12 क्योंकि हमें यह हिम्मत नहीं है कि हम
अपने आपको उन में से ऐसे कुछ के साथ
गिनें या अपनी तुलना उन से करें जो अपनी
बड़ाई खुद करते हैं और अपने आपको
आपस में नाप-तौल कर एक दूसरे से तुलना
करके बेवकूफ़ ठहरते हैं। 13 हम सीमा से
बाहर बिल्कुल घमण्ड नहीं करेंगे, लेकिन
उसी सीमा तक जो परमेश्वर ने हमारे लिए
ठहरायी है। इस सीमा में तुम भी शामिल
हो और उसी के अनुसार घमण्ड भी करेंगे।
14 क्योंकि हम अपनी सरहद[d] से बाहर अपने
आपको बढ़ाना नहीं चाहते जैसे कि तुम तक
न पहुँचने की हालत में होता, वरन् मसीह का
सुसमाचार सुनाते हुए तुम तक पहुँच चुके
हैं। 15 हम सीमा से बाहर आवश्यकता से
अधिक दूसरों की मेहनत पर घमण्ड नहीं
करते, लेकिन हमें उम्मीद है कि जैसे-जैसे
तुम्हारा विश्वास बढ़ता जाएगा, वैसे-वैसे
हम अपनी सीमा के अनुसार तुम्हारी वजह

[a] **9.15** अनुग्रह [b] **10.3** देह में [c] **10.4** संसारिक सोच विचार के [d] **10.14** सीमा

से और भी बढ़ते जाएँगे। 16 ताकि हम तुम्हारे
पड़ोस के इलाकों तक सुसमाचार ले जा सकें
और दूसरों के क्षेत्र में किए गए काम पर गर्व
न करें। 17 लेकिन जो गर्व करे, तो प्रभु पर
करे। 18 क्योंकि जो अपनी बड़ाई करता है
वह नहीं, लेकिन जिस की बड़ाई प्रभु करते
हैं, वही स्वीकार किया जाता है।

11 मैं चाहता था कि तुम मेरी थोड़ी-सी
मूर्खता में धीरज रखते, हाँ वैसे तो
तुम मेरे साथ धीरजवन्त हो। 2 इसलिए कि मैं
परमेश्वर की सी जलन तुम्हारे लिए रखता
हूँ, मैंने एक पवित्र दुल्हन की तरह तुम्हारी
बात यीशु से की है ताकि तुम्हें पवित्र कुँवारी
की तरह मसीह को सौंप दूँ। 3 लेकिन इस
बात का मुझे डर है कि जिस तरह से साँप
ने हव्वा को छला था, तुम्हारे मन मसीह के
प्रति शुद्ध और निष्कपट समर्पण से दूर न हो
जाएँ। 4 यदि कोई आकर तुम्हें प्रचार किए
गए यीशु मसीह के अलावा किसी और यीशु
के बारे में सिखाए या तुम्हें कोई और आत्मा
मिले जो पहले नहीं मिला था या तुम्हारे द्वारा
अपनाए गए सुसमाचार से भिन्न सुसमाचार
सुनाए, तो तुम उसे बड़ी आसानी से स्वागत
करने हो लेते हो 5 बड़े से बड़े प्रेरितों से मैं
अपने आपको कम नहीं समझता हूँ। 6 मैं
हालांकि संदेश देने में निपुण नहीं हूँ, फिर भी
मैं ज्ञान में कम नहीं हूँ। हर तरह से सभी बातों
में हम ने यह साफ़ साफ़ बता दिया है।

7 वापस बिना कुछ अपेक्षा किए दीनता से
सुसमाचार सुनाकर तुम्हें ऊपर उठा कर क्या
मैंने गुनाह कर दिया? 8 दूसरी कलीसियाओं[a]
से आर्थिक मदद लेकर मैंने तुम्हारी सेवा की।
9 तुम्हारे साथ रहते हुए जब मैं आवश्यकता
में था, तब किसी पर भार न बना, क्योंकि
मकिदुनिया से आए हुए भाईयों ने मेरी ज़रूरत
को पूरा किया था। मैं न तुम्हारे ऊपर बोझ
बना था और न ही बनूँगा। 10 यदि मसीह की
सच्चाई मुझ में है, तो अखाया देश में कोई
मुझे इस घमण्ड से न रोकेगा। 11 क्यों? क्या
इसलिए कि मैं तुम लोगों से प्रेम नहीं करता?
परमेश्वर को मालूम है कि मैं प्रेम करता हूँ।
12 मैं जो कर रहा हूँ, करता रहूँगा, ताकि मैं हर
एक ऐसे अवसर को खत्म कर सकूँ, जो वे
लोग अपने घमण्ड की बातों में हमारे समान
होने का दावा करते हैं।

13 इसलिए कि ऐसे लोग झूठे प्रेरित,
धोखेबाज़ कार्यकर्ता हैं, जो मसीह के प्रेरितों
का रूप धारण करते हैं। 14 इस में कोई
आश्चर्य नहीं क्योंकि शैतान खुद ज्योतिर्मय
स्वर्गदूत का सा रूप ले लेता है। 15 इसलिए
इस में कोई बड़ी बात नहीं कि उसके[b] सेवक
मसीह के सेवकों का रूप धारण करें। अन्त
में उन्हें उनके बुरे कामों की सज़ा जो मिलनी
चाहिए, ज़रूर मिलेगी।

16 मैं फिर कहना चाहूँगा कि कोई यह
न समझे कि मैं बेवकूफ़ हूँ। लेकिन अगर
समझता है, तो कम से कम मुझे बेवकूफ़
समझ कर अपना ले, ताकि मैं भी थोड़ा बहुत
घमण्ड कर सकूँ। 17 ऐसा गर्व प्रभु की आज्ञा
से नहीं है, लेकिन मैं एक मूर्ख की तरह कह
रहा हूँ। 18 इसलिए बहुत से लोग संसारिक,
शारीरिक, या जिस भी तरह से गर्व करते
हैं, मैं भी करूँगा। 19 इसलिए कि तुम इतने
अक्लमन्द हो, तुम बेवकूफ़ों को सह लेते हो।
20 यदि तुम्हें कोई गुलाम बना लेता है, शोषण
करता है, या फँसा लेता है या अपने आप को
बड़ा बनाता है या चपत लगाता है, तो तुम
सह लेते हो। 21 मुझे यह कहते हुए शर्म आती
है कि ऐसा करने में हम बहुत कमज़ोर थे।

[a] **11.8** मण्डलियों या चर्चों [b] **11.15** शैतान के

लेकिन जो कोई भी किसी तरह का घमण्ड
करने की हिम्मत करे, मैं भी उस बात के लिए
घमण्ड कर सकता हूँ।
22 क्या वे इब्री हैं? मैं भी हूँ। क्या वे
इस्राएली हैं? मैं भी हूँ। क्या वे अब्राहम के
वंश के हैं? मैं भी हूँ। 23 क्या वे मसीह के
सेवक हैं? - मैं पागल की तरह कह रहा
हूँ। मैं उन से बढ़ कर हूँ। ज़्यादा मेहनत
करने में, बार-बार जेल जाने में, कोड़े खाने
में, बार-बार मौत के जोखिमों में 24 यहूदियों
द्वारा मैंने पाँच बार उन्तालीस, उन्तालीस
कोड़े खाए। 25 मुझ पर तीन बार डंडे पड़े,
मुझ पर एक बार पथराव किया गया, तीन
बार जहाज़ टूट गए थे, एक रात मैंने समुद्र
में बितायी। 26 बार-बार यात्रा में, नदियों के
जोखिमों में, डाकुओं के जोखिमों में, अपनी
जाति वालों से जोखिमों में, अन्य जातियों
से जोखिमों में, शहर के खतरों में, जंगल के
खतरों में, समुन्दर के खतरों में, झूठे भाईयों से
खतरों में। 27 कड़ी मेहनत करने में, बिना सोए
रातें काटने में, भूख-प्यास में, सर्दी में बिना
कपड़ों के 28 इसके अलावा प्रतिदिन सब
कलीसियाओं[a] का ख्याल[b] मेरे मन पर बना
रहता है। 29 किसकी कमज़ोरी से मैं कमज़ोर
नहीं होता? किस के ठोकर खाने से मेरा मन
नहीं दुखता?
30 यदि मुझे गर्व करना ही है, मैं उन्हीं
बातों के लिए करूँगा, जो मेरी कमज़ोरी को
दिखाती हैं। 31 प्रभु यीशु मसीह के पिता और
परमेश्वर को जो सदा बड़ाई[c] के लायक
हैं, यह पता है कि मैं झूठ नहीं कह रहा हूँ।
32 मुझे पकड़ने के लिए दमिश्क में अरितास
राजा के अधीन में नियुक्त गवर्नर ने शहर
के दरवाज़ों पर चौकीदार तैनात किए थे।
33 लेकिन मुझे रस्सी की बनी टोकरी में बैठा
कर एक खिड़की से उतारा गया। इस तरह
से मैं उसके हाथों से बच निकला।

12 हालांकि घमण्ड करना अच्छी बात
नहीं है, लेकिन यह ज़रूरी है कि
कुछ बातों में घमण्ड किया जाए। इसलिए
मैं प्रभु द्वारा दिए गए दर्शनों और प्रकाशनों के
बारे में बतलाऊँगा। 2 मसीह में एक व्यक्ति
को मैं जानता हूँ, जिसे चौदह साल पहले
तीसरे स्वर्ग पर उठा लिया गया था। ऐसा देह
सहित हुआ था या बिना देह, यह मुझे नहीं
मालूम। परमेश्वर को इस बात की जानकारी
है। 3 और यह आदमी देह के साथ या देह के
बगैर नहीं मालूम, यह तो परमेश्वर ही जानते
हैं 4 स्वर्ग पर उठा लिया गया और वहाँ ऐसी
बातें सुनीं, जो बयान से बाहर तो है हीं, उन्हें
बताना भी ठीक नहीं है। 5 ऐसे व्यक्ति के
बारे में तो मैं गर्व करूँगा, लेकिन जहाँ तक
खुद का सवाल है, मैं अपनी कमज़ोरियों को
छोड़ और किसी बात पर गर्व न करूँगा।
6 यदि मैं गर्व करूँ भी तो मैं मूर्ख न ठहरूँगा,
क्योंकि सच ही कहूँगा। फिर भी रूक जाता
हूँ, ताकि ऐसा न हो कि जैसा कोई मुझे देखता
है या मुझ से सुनता है, मुझे उससे बढ़ कर
समझे।
7 परमेश्वर ने मुझे असाधारण प्रकाशन
दिए। इसलिए उनकी वजह से मैं कहीं घमण्ड
से न भर जाऊँ, मेरी देह[d] में एक काँटा
चुभाया गया। शैतान का एक दूत[e] मुझे
पीड़ित करता था, ताकि मैं अहंकार से भर
न जाऊँ। 8 मैं अलग-अलग तीन समयों में
प्रभु के सामने गिड़गिड़ाया, “प्रभु इसे मुझ से
दूर कर दीजिए।” 9 लेकिन प्रभु यीशु बोले,

[a] **11.28** मसीही विश्वासियों का झुण्ड या चर्च [b] **11.28** चिन्ता का बोझ [c] **11.31** स्तुति, प्रशंसा [d] **12.7** शरीर
[e] **12.7** संदेशवाहक

“मेरा अनुग्रह तुम्हारे लिए काफ़ी है। इसलिए
कि मेरी ताकत कमज़ोरी ही में ज़्यादा काम
करती है।” इसलिए मैं बड़े आनन्द से अपनी
कमजोरियों में गर्व करूँगा, ताकि मसीह
की ताकत मुझ में बनी रहे। 10 इसलिए
मैं मसीह के लिए कमज़ोरियों, निन्दाओं,
गरीबी, सताव और कठिनाईयों में सन्तुष्ट
हूँ, क्योंकि जब कभी मैं कमज़ोर हूँ, तभी मैं
बलवान होता हूँ।
11 मैं मूर्ख तो बना, लेकिन तुम ही ने मुझे
ऐसा करने के लिए मजबूर किया। तुम्हें
तो मेरी बड़ाई करनी चाहिए थी। क्योंकि
हालांकि मैं कुछ भी नहीं हूँ फिर भी उन बड़े
से बड़े प्रेरितों में से किसी बात में कम नहीं
हूँ। 12 सचमुच बड़े धीरज के साथ एक प्रेरित
के सबूत - चिन्ह, अजीब काम और सामर्थी
काम तुम्हारे बीच दिखाए गए थे। 13 किस
बात में तुम दूसरे चर्चों[a] से कम समझे गए,
केवल इस बात में कि तुम पर मैं बोझ न
हुआ? मेरी इस गलती के लिए मुझे माफ़
करो।
14 तीसरी बार मैं तुम्हारे यहाँ आने पर हूँ।
लेकिन मैं तुम पर बोझ न बनूँगा। इसलिए
कि मैं तुम्हारी दौलत नहीं पर तुम्हें चाहता
हूँ। बच्चों को अपने माता-पिता के लिए बचत
नहीं करनी पड़ती है, लेकिन माता-पिता बच्चों
के लिए बचत करते हैं। 15 अब मैं खुशी से
तुम्हारे लिए खर्च करूँगा और खर्च भी हो
जाऊँगा जब कि मैं तुम लोगों से अधिक
प्रेम करता हूँ, क्या मेरे लिए तुम्हारा प्रेम कम
रहेगा? 16 तुम में से कुछ तो यह मानते हैं कि
मैं तुम पर बोझ न बना, फिर भी कुछ सोचते
हैं कि चालाकी से मैंने तुम से फ़ायदा उठाया।
17 जिन लोगों को मैंने तुम्हारे पास भेजा था,
क्या उनके ज़रिए से मैंने तुम से कुछ लाभ
उठाया? 18 मैंने तीतुस को ज़बरदस्ती और
साथ में दूसरे भाई को भेजा था। क्या तीतुस
ने तुम्हें लाभ का निशाना बनाया था? क्या
उसी की तरह हमारा व्यवहार नहीं था और
हमारे कदम भी उसकी तरह नहीं थे?
19 शायद तुम लोग यह समझ रहे होगे कि
हम यह सब अपने बचाव के लिए कह रहे हैं।
जो कुछ मैं कह रहा हूँ वह सब परमेश्वर को
मौजूद जान कर मसीह में कह रहा हूँ। प्रिय
भाईयो, जो हम करते हैं, वह सब तुम्हारी
तरक्की के लिए है। 20 मेरे भीतर, यह डर है
कि कहीं ऐसा न हो, कि जैसा मैं चाहता हूँ,
मेरे आने पर तुम्हें वैसा न पाऊँ। और तुम भी
जैसी मुझ से आशा कर रहे हो, न पाओ।
शायद तुम्हारे बीच झगड़ा-फ़साद, गुस्सा,
विरोध, ईर्ष्या, चुगली, घमण्ड और बखेड़े
हों। 21 कहीं ऐसा न हो कि मेरे परमेश्वर
फिर से तुम्हारे यहाँ आने पर मुझे दीन करें
और मुझे बहुतों के लिए दुखी होना पड़े,
जिन्होंने पिछले समयों में गुनाह[b] किया और
गंदे काम, यौन-अनैतिकता और कामुकता
को छोड़ा नहीं।

13 मैं तीसरी बार तुम्हारे यहाँ आने पर
हूँ। दो या तीन गवाहों के मुँह से
हर एक बात की पुष्टि की जाए। 2 पिछली
बार जब मैं आया था, तब भी यही कह रहा
था। अब जब कि मैं तुम्हारे बीच हाज़िर नहीं
हूँ, जिन्होंने पहले अपराध किया था, उन
से और दूसरे सभी लोगों से मैं यह कहना
चाहता हूँ कि यदि मैं फिर आऊँगा तो उन्हें
नहीं छोड़ूँगा। 3 क्योंकि तुम तो इस बात का
सबूत चाहते हो, कि यीशु मसीह मुझ में
होकर बोलते हैं। तुम से निबटने के लिए वह
कमज़ोर नहीं हैं, लेकिन सामर्थी हैं। 4 जब वह

[a] **12.13** कलीसियाओं [b] **12.21** अपराध

क्रूस पर चढ़ाए गए थे, तब कमज़ोर दिख रहे
थे, लेकिन परमेश्वर की शक्ति[a] से ज़िन्दा
हैं। इसलिए कि हम भी उन में कमज़ोर हैं,
लेकिन हम परमेश्वर की शक्ति से उनके[b]
साथ जियेंगे[c], ताकि तुम्हारी सेवा करते रहें।
5 अपने आप को जाँचो कि विश्वास में हो
या नहीं, अपने आपको परखो। क्या तुम्हें यह
नहीं पता कि यीशु मसीह तुम में हैं? नहीं तो
तुम जाँच में असफ़ल साबित हुए हो। 6 मेरी
आशा यह है कि तुम यह जान लो कि हम
असफ़ल नहीं रहे हैं। 7 हमारी प्रार्थना यह
है कि तुम कुछ गलत मत करो, इसलिए
नहीं कि तुम सिद्ध दिखो, लेकिन इसलिए
कि भलाई करो, चाहे असफ़ल ही दिखो।
8 इसलिए कि हम सच्चाई के विरोध में कुछ
नहीं कर सकते, लेकिन सच्चाई के पक्ष में
ही कर सकते हैं। 9 जब हम कमज़ोर ठहरते
हैं, लेकिन तुम बलवन्त हो, तब हमें खुशी
मिलती है। हमारी प्रार्थना यह होती है कि
तुम पूरी तरह से योग्य बन जाओ। 10 इसलिए
अभी मैं तुम्हारी गैरहाज़िरी में लिख रहा हूँ,
ताकि जब मैं आऊँ, मुझे अपना अधिकार
इस्तेमाल करके तुम्हारे साथ कठोरता से
बर्ताव न करना पड़े - परमेश्वर ने मुझे तुम
को बनाने[d] के लिए दिया है, न कि बर्बाद
करने के लिए
11 आखिर में भाईयो-बहनो खुश रहो, सिद्ध
हो जाओ, हिम्मत रखो, मेल से रहो, और प्रेम
एवं शान्ति के परमेश्वर तुम्हारे संग होंगे।
12 गले लगाते[e] एक दूसरे से मिलो।
13 सभी पवित्र लोग तुम्हें सलाम कहते हैं।
14 प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह, परमेश्वर
का प्रेम और पवित्रात्मा की संगति तुम सभी
के साथ रहे।

[a] **13.4** सामर्थ्य [b] **13.4** यीशु के [c] **13.4** जीवित रहेंगे [d] **13.10** परिपक्व करने [e] **13.12** पवित्र चुंबन से

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com